दीवाली का अद्भुत रहस्य

गुरू जी – अरे धनीराम कहाँ है तू ?

धनीराम – अरे गुरूजी! आज सुबह–सुबह इधर अचानक! बिना किसी सूचना के ?

गुरू जी – अरे बहुत दिन हुए तुमने कोई खबर नहीं दी, मैं काशी से लौट रहा था इसलिए सोचा तुमसे मिलता चलूँ और दीवाली का पर्व भी है इस बार तुम्हारे यहाँ मना लूँगा,तुम्हें कोई तकलीफ ?

धनीराम– नहीं–नहीं गुरूजी– मन नही मन हे भगवान ये आफत कहाँ से गले आकर पड़ गयी ? महालोभी तो पहले से ही है,एक तो बिना बुलाये आ धमके, ऊपर से दीवाली में दीवाला निकालने का प्लैन भी बना कर आये है।

मनीराम– क्या हुआ भैया ? ऐसा क्यों सोच रहे हो ? हमारे बड़े भाग्य जो दीवाली के शुभ अवसर पर मेहमान वह भी पिता जी गुरूजी हमारे घर आये।

धनीराम– चुप कर! बड़ा दाता बनने चला है, अरे तुझे क्या पता एक–एक पैसा कमाने में मेरा कितना खून पानी बनकर बह जाता है! और यह ढोंगी! मेरी गाढ़ी कमाई पानी में बहा डालेगा।

गुरू जी – अरे धनीराम तू कहाँ चला गया ?

धनीराम– आया गुरूजी ।

मनीराम– गुरूजी अच्छा हुआ इस बार आप दीवाली में यहाँ आयें। दीवाली के कई काम ऐसे हैं जो हम करते तो चले आ रहे हैं, पर समझ में कभी भी नहीं आये,इस बार आप हमें इसका रहस्य बतायेंगें तो हमारा संशय दूर हो जायेगा।

गुरू जी – दीवाली में कौन सा संशय बेटा ?

धनीराम– अरे गुरूजी इसका दिमाग बहुत चलता है, न जाने क्या – क्या हमसे भी हमेशा पूँछता रहता है।

गुरूजी – अच्छा बताओ क्या समझ में नहीं आता है ?

मनीराम– गुरू जी कुछ खास नहीं, बस यही एक दो बातें हैं कि पहले लोग अलाए–बलाए खरीदते हैं फिर जाकर चौराहे पर जलाकर खुश होते हैं,अगले वर्ष फिर वही अलाए–बलाए कहाँ से आ जाती है?

गुरूजी– बेटा इन सब बातों में तू क्यों जाता है जो पूर्वजों ने परम्परा बनाई है,उसी में हमारी भलाई है।

मनीराम– और गुरूजी लक्ष्मी के साथ गणेश जी की पूजा की जाती है वैसे हमेशा तो लक्ष्मी के साथ श्रीनारायण जी दिखाये जाते हैं।

गुरूजी– फिर तू वही बिना सिर –पैर की बातें कर रहा है, अरे सब एक ही खानदान के हैं, कभी उनके साथ उनको बैठा दिया तो तुम्हें क्या तकलीफ है? नारायण जी तो आज तक कभी नाराज हुए नहीं?

मनीराम– ये बात नही है गुरूजी, मैं तो बस ऐसे ही पूँछ रहा था,एक बात और है कि ये उल्लू को तो प्रकाश में कुछ दिखाई ही नहीं देता,और हम लोग लक्ष्मी जी को कोने–कोने में प्रकाश करके बुलाते हैं, उनके वाहन को तो दिखाई ही नहीं पड़ेगा तो भला वो आयेगीं कैसे?

गुरूजी– फिर तू उट–पटॉग बातें कर रहा है, अरे ये आजकल के उल्लुओं को नहीं दिखता है, जैसे आजकल के मनुष्यों को तो दिन में भी चश्में लगाने पड़ते हैं तो उल्लुओं को भी नहीं दिखता, पर किसी देवता को कभी तुमने चश्मा लगाये देखा है? अरे वो देवता हैं देवता, उनकी चिन्ता तू क्यों करता है? उन्हें कब– कहाँ –कैसे जाना है ये वो जाने ।

मनीराम – पर गुरूजी एक तरफ तो लक्ष्मी का सभी आह्ववान करते हैं और दूसरी ओर इतने मँहगे–मँहगे पटाखों में आग लगा कर, एक प्रकार से पैसों की बरबादी करते हैं, और इससे कई तो अपने हाथ ही जला लेते हैं किसी की ऑंख जल जाती तो किसी का घर जल जाता है।

गुरूजी- अरे दीवाली पर फुलझड़ी पटाखे जलाना शुभ होता है बेटा! तभी तो लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं,इसमें बरबाद करना क्या? लोगों को सावधानी से जलाना चाहिए,उतावला क्यों होना चाहिए? आज तक मैं तो कभी जला नहीं?

मनीराम- तो क्या गुरूजी आप भी पटाखे जलाते हैं?

गुरूजी - तो क्यों नहीं जलाऊँगा? ये तो दीवाली में बड़ा शुभ होता है।

मनीराम- पर गुरूजी इससे तो बहुत प्रदूषण फैलता है।

गुरूजी- क्या मेरे ही जलाने से सब प्रदूषण फैला जा रहा है? और अगर ये जलायेगें नही तो सब फैक्टरी में काम करने वालों के परिवार भूँखे नहीं मर जायेंगें? तुझे प्रदूषण की बहुत फिकर है तो तू मत जलाना।

मनीराम - ठीक है गुरूजी,पर ये एक तरफ तो लोग अलाए-बलाए जला देते हैं फिर दूसरे दिन दरिद्र को भगाने के लिए सूप पीटते हैं और फिर ईश्वर को बुलाते है। ऐसे कैसे हो सकता है?

गुरूजी- ऐसा क्यों नहीं हो सकता? अगर कहीं छिप कर बैठा रह गया होगा तो वह भी भाग जायेगा, तुम्हें क्या तकलीफ भगाने से?

मनीराम- नहीं गुरूजी समझ में नहीं आ रहा, इसलिए पूँछ लिया, गुरूजी- क्या हम लोग दीवाली की रात का काजल नही लगायेंगें तो छछूँदर बनेगें ? वैसे तो कहते हैं कि जैसे कर्म करोगे वैसा जन्म मिलेगा तो काजल न लगाकर क्या ऐसा उल्टा हो जाता है जो व्यक्ति छछूँदर बनता है?

गुरूजी- अरे छछूँदर नहीं तो क्या हाथी बनेगा,तेरे दिमाग में क्या सर्फ एक्सल पड़ा है

जो इतने दिनों से हमारे पूर्वज करते आये पर तेरे पल्ले कुछ पड़ा ही नहीं?

मनीराम- नहीं गुरू जी आप नारज न होइए।

धनीराम- गुरू जी ये चार अक्षर शहर में पढ़ क्या लिया, अपने को बड़ा पढ़ेसू समझता है, हर बात में सबसे क्वेश्चन करता रहता है। अब आप को ही देख लो न

पानी न खाना, बस बहस पर बहस किये जा रहा है,अरे गुरू जी कहीं जा रहे हैं क्या? जो आते ही बमबारी करने लगे, अरे थोड़ा रिलैक्स होने दो फिर बड़े आराम से पूँछ लेना।

गुरू जी– अरे कोई बात नहीं, अभी ना समझ है धीरे–धीरे समझ जायेगा, लेकिन शहर की हवा बहुत खराब लग रही है,थोड़ा ध्यान रखना।

ब्रह्माकुमार– अरे भैया धनीराम क्या कर रहे हो?

धनीराम– (मन ही मन में गुस्सा करते हुए, लो ये एक और आ गये, इनको भी कोई काम तो रहता नहीं है, मेरा दिमाग खाने चले आते हैं) कुछ नहीं आज कैसे इधर हमारी याद आ गयी ?

ब्रह्माकुमार– इधर से निकल रहा था सोचा तुम्हें दीवाली की बधाई देता चलूँ।

मनीराम– अरे कृष्णा भैया आप!

ब्रह्माकुमार– हाँ मनी तू कब आया?

मनीराम– कल ही आया हूँ ।

ब्रह्माकुमार– दीवाली मनाने ?

मनीराम– हाँ आया तो दीवाली की छुट्टी में ही हूँ, पर दीवाली की कई बातें हमें समझ में नहीं आती,गुरूजी से पूँछ रहा था,पर कुछ सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला।

ब्रह्माकुमार– अरे तुम्हें क्या समझ में नहीं आता? मैं पिछले साल से ब्रह्माकुमारीज का स्टूडेन्ट हूँ, वहाँ पर सभी त्योहारों का सत्य आध्यात्मिक रहस्य बताया जाता है, पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दीवाली का कार्यक्रम कल ही तो है तुम मेरे साथ कल सेवाकेन्द्र चलना,वहाँ तुम्हें सारे रहस्य पता पड़ जायेंगें।

मनीराम–ठीक है भैया।

धनीराम– (मन में बड़बड़ाते हुए इसको ले जायेगा इसको भी बर्बाद कर देगा) अरे नहीं कृष्णा! ये वहाँ कहाँ जायेगा? कल घर पर बहुत काम है,अभी इतनी देर से गुरू

जी का दिमाग खाली कर रहा था अभी पूरा नहीं हुआ,जो कुछ पूँछना हो इधर ही जल्दी से पूँछ लो, कृष्णा इसे यहीं बता दो।

ब्रह्माकुमार– ठीक है धनीराम, पूँछों मनी क्या जानना चाहते हो?

मनीराम– यही कि ये दीवाली पर पहले लोग अलाए– बलाए खरीदते हैं फिर जाकर चौराहे पर जलाकर खुश होते हैं,अगले वर्ष फिर वही अलाए–बलाए कहाँ से आ जाती है?

ब्रह्माकुमार –

मनीराम– भैया पहले रात्रि को अलाए–बलाए जला देते हैं, फिर दूसरे दिन दरिद्र को भगाने के लिए सूप पीटते हैं और फिर ईश्वर को बुलाते है। ऐसे क्यों?

ब्रह्माकुमार –

मनीराम – और भैया ये लक्ष्मी के साथ गणेश जी की पूजा की जाती है वैसे हमेशा तो लक्ष्मी के साथ श्री नारायण दिखाये जाते हैं।

ब्रह्माकुमार –

मनीराम– भैया ये उल्लू को तो प्रकाश में कुछ दिखाई ही नहीं देता,और हम लोग लक्ष्मी जी को कोने–कोने में प्रकाश करके बुलाते हैं उनके वाहन को तो दिखाई ही नहीं पड़ेगा तो भला वो आयेगीं कैसे?

ब्रह्माकुमार –

मनीराम– क्या हम लोग दीवाली की रात का काजल नही लगायेंगें तो छछूँदर बनेगें ? वैसे तो कहते हैं कि जैसे कर्म करोगे वैसा जन्म मिलेगा तो काजल न लगाकर क्या ऐसा उल्टा हो जाता है जो व्यक्ति छछूँदर बनता है?

ब्रह्माकुमार –

मनीराम– अरे भैया आज तो मेरे अन्दर के कपाट ही खुल गये,अरे कितना सुन्दर रहस्य है इन त्योहारों में?

धनीराम– और हम सब लकीर के फकीर ही बने रहे!

गुरूजी–राम–राम–राम! हे भगवान! सारी जिन्दगी मैं दुनिया को रोशन करने का प्रवचन देता रहा और मैं घनघोर अँधेरे में ही रहा!

ब्रह्माकुमार – इसीलिए तो परमज्योति शिवबाबा फिर से हम सबकी ज्योति जगाने आये हैं।कल आप सभी लोग हमारे सेवाकेन्द्र पर आइयेगा तो और भी बहुत सारे रहस्यों का पता पड़ जायेगा

सब एक साथ– हम जरूर आयेंगें।

ब्रह्माकुमार –अच्छा ओमशान्ति ।

गीत–